21 मेरा स्कूल – मेरा सपना : स्कूल–प्रमुख की मेरी आदर्श छवि

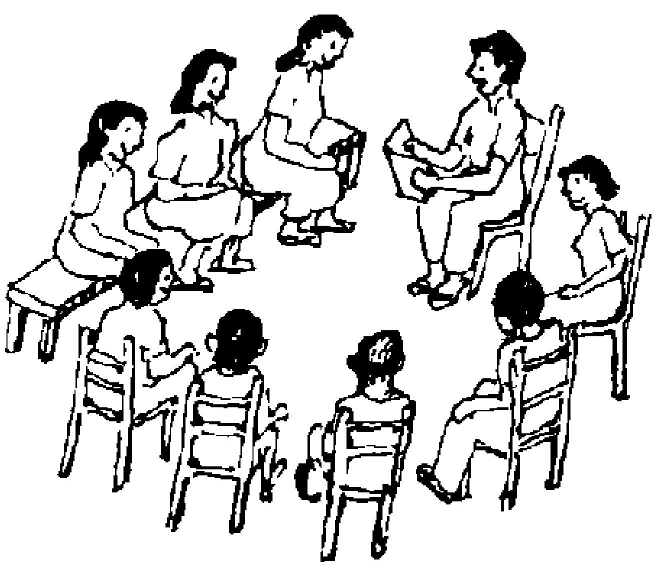
आयशा दास



अब्बा सब कुछ कह देते हैं और यही मार्टिन लूथर किंग जूनियर करते थे।

हर प्रभावशाली शिक्षक का एक सपना होता है। हर सफल वैज्ञानिक का एक सपना होता है। हर व्यवसायी का एक सपना होता है। यदि आप किसी सपने से प्रारम्भ नहीं करते तो आप यथार्थ का सामना नहीं कर सकते। लेकिन एक सपना साथ हो तो आप किसी भी चीज का सामना कर सकते हैं।

आदर्श स्कूल नेतृत्व के बारे में मैं यूँ सोचना चाहूँगी जैसे वह एक अच्छे सपने की शुरुआत हो। आखिरकार, हर स्कूल उतना ही सफल होता है जितना उसका नेतृत्व। आदर्श स्कूल–नेतृत्व वास्तविकता पर आधारित सपने प्रदान करता है और बच्चों, पालकों तथा शिक्षकों – पूरे स्कूल परिवार – को आनन्द, परिपूर्णता और सफलता के लक्ष्य की ओर ले जाता है। आदर्श स्कूल–प्रमुख को यह अहसास होता है कि उसके स्कूल का प्रत्येक बच्चा और प्रत्येक शिक्षक एक अनूठा व्यक्ति है। हर व्यक्ति की अपनी शक्तियाँ और कमजोरियाँ होती हैं। इसके अलावा हर व्यक्ति की अपेक्षाएँ होती हैं। और एक आदर्श नेतृत्व इन अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए प्रोत्साहन और आवश्यक साधन प्रदान करता है।



क्या यह एक हजार से अधिक बच्चों और अनेक शिक्षकों वाले किसी बड़े स्कूल में कतई सम्भव है? कई साल पहले प्रत्येक कक्षा में शायद 25 या 30 बच्चे होते थे। आज अधिक सम्भावना इस बात की है कि एक ठंसी हुई कक्षा में केवल एक शिक्षक, 50 से अधिक बच्चे और गतिविधि के लिए बहुत थोड़ी–सी जगह होगी। पुराने दिनों में, एक स्कूल में खेल का मैदान, गायन कक्षाएँ, प्रतिभाशाली बच्चों के लिए अतिरिक्त संगीत कक्षाएँ, वार्षिक स्कूल नाटक, क्रिसमस बाजार और खेल उत्सव होते थे। बच्चों के लिए विविध प्रकार की गतिविधियाँ होती थीं और उन्हें ऐसे अनुभवों का खजाना मिलता था जो रोचक, रोमांचक और चुनौतीपूर्ण होते थे।

“पुराने दिनों में, एक स्कूल में खेल का मैदान, गायन कक्षाएँ, प्रतिभाशाली बच्चों के लिए अतिरिक्त संगीत कक्षाएँ, वार्षिक स्कूल नाटक, क्रिसमस बाजार और खेल उत्सव होते थे। बच्चों के लिए विविध प्रकार की गतिविधियाँ होती थीं और उन्हें ऐसे अनुभवों का खजाना मिलता था जो रोचक, रोमांचक और चुनौतीपूर्ण होते थे।”

ऐसे व्यस्त लोग होते हैं जो ढेर सारी चीजों में दिलचस्पी लेते हैं और उनमें संलग्न रहते हैं। आमतौर पर ऐसे लोगों के पास किसी और रुचि के लिए भी समय रहता है, क्योंकि समय–प्रबन्धन का उनका कौशल उन्हें ऊर्जावान, स्वस्थ और उत्साह भरा बनाए रखता है। दुर्भाग्य से, ऐसे भी अनेक लोग होते हैं जो प्रतिभावान होते हुए भी बहुत कम कुछ करते हैं और उनके पास "समय नहीं रहता" क्योंकि वे "बहुत व्यस्त" रहते हैं।

मेरे सपने का आदर्श स्कूल–नेतृत्व 10 अति आवश्यक बिन्दुओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है:

1. पूरे स्कूल की प्रसन्नता: यह जॉन "मिस्टर चिप्स" मेसन द्वारा प्रस्तुत किया गया एक विचार है। मुझे यह बहुत शानदार विचार लगा क्योंकि मैंने हमेशा महसूस किया है कि कोई स्कूल कितना अच्छा है, इसका निर्णय आप उस प्रसन्नता गुणांक को ध्यान में रखकर ले सकते हैं जो आपको अपने आसपास दिखाई देता है और जिसे आप अनुभव कर सकते हैं। यह बात हमने प्रशिक्षण महाविद्यालय में मनोविज्ञान में सीखी थी: "एक प्रसन्न बच्चा अधिक तेजी से सीखता है और यह उसे अच्छा लगता है।"

2. आदर्श स्कूल का प्रतिनिधित्व एक त्रिभुज द्वारा किया जाता है। इसमें स्कूल–प्रमुख, शिक्षक दल और घर के पास अदा करने को एक भूमिका होती है। बच्चा इस त्रिभुज के केन्द्र में अति महत्वपूर्ण व्यक्ति (वी.आई.पी.) के रूप में होता है।

3. आदर्श स्थिति में नेतृत्व एक ऐसा स्कूल चाहेगा जो बाहर खुले में गतिविधियों के लिए पर्याप्त सुविधाएँ प्रदान करता हो। इनके माध्यम से चढ़ने, दौड़ने, साइकिल चलाने, पैदल चलने, प्रकृति और हर प्रकार की रचनात्मकता के लिए गुंजाइश रहेगी (जैसे, पेड़ पर बना एक घर? पैडल–नाव चलाने लायक पोखर? रेत का गड्ढा? बागवानी? एक जंगल जिम? तुम फिर से सपना देख रही हो, आयशा!) ।

4. कक्षा के कमरेः हम आन्तरिक सज्जा के व्यवसाय में न होकर सीखने के व्यवसाय में हैं। और एक स्कूल तब पनपता है जब सीखना रोमांचक हो; हर क्षण खोज, अनुभव और अन्वेषण का अवसर प्रदान करता हो। प्रत्येक इंच जगह का इस्तेमाल किया गया होः खिड़की की पट्टी और बहुत से नरम बोर्ड, प्रकृति की एक मेज और घर का एक कोना। कृपया गौर करें कि इन चीजों का केवल नर्सरी और किण्डरगार्टन कक्षाओं तक ही सीमित रहना जरूरी नहीं है। छोटी कक्षाओं में होने वाली प्रकृति–मेज भी उतनी ही रोचक हो सकती है जितनी कक्षा सात या आठ के स्तर पर जहाँ प्रकृति और विज्ञान उचित आकार लेने लगते हैं।

   घर का कोना चार साल के बच्चों को बड़ों की भूमिका निभाने का अवसर देता है; अधिक आयु के बच्चे भी बढ़ईगिरी या खाना बनाना सीख सकते हैं – उसी तरह, जैसे घर में कोई शौकिया तौर पर यह काम करता है ।

   वह शिक्षक भाग्यशाली है जिसे 30 से कम बच्चों की कक्षा को पढ़ाना हो। लेकिन जैसा एक बार सीनियर सिरिल ने कहा था, "अब कक्षाएँ तो बड़ी ही रहने वाली हैं, तो अधिक संख्या को सम्भालने का तरीका खोज ही लें।" एक ही रास्ता है – समूह में पढ़ाने के तरीके अपनाए जाएँ। इसलिए कक्षा के फर्नीचर की व्यवस्था ऐसी होगी जिसमें से शिक्षक और छात्रों के समूह आसानी से आ–जा सकें।

   किसी भी कार्यस्थल में रंग एक महत्वपूर्ण पहलू होता है और इसका सम्बन्ध खासतौर से मौसम, वायु संचार और प्राकृतिक प्रकाश से होता है। गरम रंग होते हैं और ठण्डे रंग होते हैं। रंग राहत देने वाले भी होते हैं और शान्त करने वाले भी। दीवारों पर उपयोग करने के लिए सबसे सुरक्षित रंग सफेद या क्रीम होता है, क्योंकि फिर आप अपने नरम बोर्डों और फर्नीचर को रंगने के लिए कोई भी रंग चुन सकते हैं (किस्मत का धन्यवाद है कि अब धोए जा सकने वाले रंग और नीले टैक उपलब्ध हैं!)।

5. अच्छा स्कूल–नेतृत्व इस बात को समझता है कि करके सीखा जाए, वह इस सिद्धान्त में यकीन रखता है; इसलिए गतिविधि आधारित पद्धतियाँ बहुत जरूरी हैं। एक अच्छे स्कूल में रटकर सीखने को कभी बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

6. मेरे सपनों के नायक के पास शिक्षा की एक स्पष्ट धारणा होगी, जिसके अन्तर्गत इन बातों का ध्यान रखा जाएगाः

   क) हमारे आसपास के संसार का भरपूर उपयोग किया जाए।

   ख) सोचना, समस्याएँ हल करना, समाधान खोजना सीखा जाए।

   ग) सुझाव देने और प्रोत्साहित करने के लिए एक सहयोगी उपलब्ध रहे – और जब चुप रहने की जरूरत हो तब वह चुप रहे।

7. स्वतन्त्रता की बहुत बात की जाती है। मेरा आदर्श नेतृत्व ऐसी स्वतन्त्रता प्रदान करेगा जो लाइसेंस की तरह दी जाने वाली नहीं हो। विकल्प चुनने की स्वतन्त्रता, अपनी स्वाभाविक गति से काम करने की स्वतन्त्रता, जो खुद को आकर्षक लगे वह चुनने की स्वतन्त्रता, बजाय इसके कि "हर व्यक्ति को दो नीली खिड़कियाँ और एक लाल दरवाजा चुनना जरूरी है।"

8. अच्छा नेतृत्व अच्छी शिक्षा सुनिश्चित करेगा, क्योंकि वह निरन्तर मार्गदर्शन करेगा, कार्यशालाएँ, चर्चाएँ आयोजित करेगा, एक शिक्षक के जीवन में आ सकने वाली समस्याओं के व्यक्तिगत समाधानों के लिए समय प्रदान करेगा। नेतृत्व व्यवहार–कुशलता और शिष्टाचार को हितकारी ढंग से इस्तेमाल करना सीखता है ताकि किसी व्यक्ति को जब यह

> *जब हम मूल्यांकन के बारे में सोचते हैं तो हम आमतौर पर बच्चों की रिपोर्ट के बारे में और उनकी सफलता या असफलता के ऐलान के विभिन्न तरीकों के बारे में सोचते हैं। अच्छा नेतृत्व स्कूल का समग्र रूप से मूल्यांकन करता है और स्कूल–परिवार के हर सदस्य को मौका देता है कि वह स्कूल के कार्यक्रम और उसकी सफलता के बारे में अपनी बात कह सके।*

कहा जाता है कि वह गलत कर रहा है तो ऐसा न लगे कि उस पर अभियोग लगाया जा रहा है।

प्रसंगवश, ऐसी कार्यशालाओं और चर्चाओं को प्रधानाचार्य, यहाँ तक कि प्रशासनिक समिति (गवर्निंग काउंसिल) के लिए भी, नेतृत्व–कार्यक्रम का हिस्सा होना चाहिए। मैं वह समय कभी नहीं भूलूँगी जब कलकत्ता में टीचर्स सैन्टर द्वारा चलाए जा रहे टी.टी.सी. रिफ्रेशर कोर्स में एक स्थानीय प्रधानाचार्य यह घोषणा करते हुए शामिल हुए कि आयु का कोई बन्धन नहीं होना चाहिए। वे एक ऐसे नायक का उदाहरण थे जिन्होंने सीखना बन्द नहीं किया था। जिन्हें अपने ज्ञान को ताजा करने का महत्व समझ में आया और जिन्होंने ऐसे लोगों में शामिल होने का समय निकाला जो उनके जैसे उच्च पद पर नहीं थे। यह बात हम सभी को अच्छी लगी।



9. पालक स्कूल के परिवार का अति महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। वे दिन गए जब रूखे सूचनापट्ट कहते थे, "पालक इस सीमा से आगे न जाएँ"। आज एक आदर्श स्कूल में पालक स्कूल का अंग होते हैं। वे स्कूल के पाठ्यक्रम में किसी खास बात को आगे बढ़ाने के लिए समय और विशेषज्ञता का सहयोग भी दे सकते हैं।

10. हर अच्छे प्रयास के लिए ऐसी नियमित, सहानुभूतिपूर्ण समीक्षा की जरूरत होती है, जिसमें हम खरी–पूरी सफलताओं का सार प्रस्तुत कर सकें, उन विचारों की चर्चा कर सकें जो लक्ष्य से भटक गए या उस प्रयास की बात हो सके जिसे दोहराने की जरूरत है। जब हम मूल्यांकन के बारे में सोचते हैं तो हम आमतौर पर बच्चों की रिपोर्ट के बारे में और उनकी सफलता या असफलता के ऐलान के विभिन्न तरीकों के बारे में सोचते हैं। अच्छा नेतृत्व स्कूल का समग्र रूप से मूल्यांकन करता है और स्कूल–परिवार के हर सदस्य को मौका देता है कि वह स्कूल के कार्यक्रम और उसकी सफलता के बारे में अपनी बात कह सके।

क्या यह एक सपना है? मैं ऐसा नहीं सोचती। इस सपने को पूरी तरह से साकार करने में समय, प्रयास और निष्ठा लगती है। पर यदि हम अपने किए हुए की समीक्षा नहीं करेंगे तो हम कुछ भी हासिल नहीं कर पाएँगे। मैं रचनात्मक आलोचना की बात कर रही हूँ।

"आलोचना से बचना हो

तो कुछ मत कहो

कुछ मत करो और

कुछ मत बनो।''

मेरा आदर्श नेतृत्व कभी स्वयं को

इस स्थिति में नहीं पाएगा!

आयशा दास 35 वर्षों से एक शिक्षक–प्रशिक्षक हैं। प्राथमिक शिक्षा उनका पहला प्यार है। उनकी विशेष रुचि पठन में है जिसे वे सबसे महत्वपूर्ण मानती हैं। उन्हें लगता है कि इसके बगैर हम बहुत दूर नहीं जा पाएँगे, इसलिए पढ़ना सिखाने का हमारा तरीका सौ प्रतिशत सफल होना आवश्यक है। आयशा दास ने अपना टी.टी.सी. लॉरेटो हाउस से किया और उसके बाद कोलकाता विश्वविद्यालय से बी.ए. किया। फिर उन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ लीड्स् से शिक्षा में डिप्लोमा किया और यूनिवर्सिटी ऑफ मैनचेस्टर से एम.एड.। उनसे ayesha.das@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।